Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

शास्त्रीय संगीत में बंदिश का स्वरूप

DR. ANJU SURYABHAN FULZELE
Assistant Professor, Amolakchand Mahavidyalay, Yavatmal, Maharashtra

संक्षेपिका: *भारतीय संगीत का इतिहास विभिन्न गीत रचनाओं से भरपूर रहा है। वैदिक काल में सामगान, गंधर्वगान, प्राचीनकाल में – ध्रुवा, जातिगान, गीती गान, मध्यकाल में प्रबंध, ध्रुपद, धमार और आधुनिक काल में ठुमरी, ख्याल, तराना आदि रचना को प्राचीन काल में 'गीत', मध्यकाल में 'प्रबंध' और आधुनिक काल में 'बंदिश' कहते हैं। शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, लोकसंगीत या संगीत का कोई भी प्रकार हो गीतए बंदिश के बिना अधूरा है। बंदिश को – गीत, रचना, प्रबंध, चीज, गत इत्यादि नाम से संबोधित किया जाता है। रागदारी संगीत मे बंदिश को महत्वपूर्ण स्थान है। राग का स्वरूप स्पष्ट करने हेतु बंदिश एक माध्यम है। शास्त्रीय संगीत की परंपरा, राग प्रवृत्ती को पोषक है। इसीलिए बंदिश के इर्द-गिर्द सम्पूर्ण राग चलता है। राग का सम्पूर्ण व्यक्तित्व हमें अच्छी बंदिशों में दिखाई देता है। बंदिश की रचना करते समय बंदिशकार को राग का दर्शन जिस प्रकार से होता है वह उसी प्रकार से बंदिश की निर्मिती करता है। बंदिश का रचनाकार और गायक दोनों ही निर्मिती में समान योगदान रखते है।*

कुंजी शब्द: *स्वर, राग, बंदिश, शास्त्रीय, रचना, गीत।*

भूमिका

स्वर, लय और शब्द इन तीनों घटकों से बंधी रचना बंदिश कहलाती है। जो राग की चौखट में गायी जाती है। बंदिश गायन में ताल की उपस्थिति और काव्य द्वारा रस भाव आवश्यक है। राग, ताल, काव्य इनके सहयोग से ही बंदिश प्रस्तुतीकरण होती है। राग के स्वरूप एवं उसके सौन्दर्य को प्रस्तुत करने का काम बंदिश ही करती है। हिंदुस्तानी संगीत में राग की संकल्पना जितनी महत्त्वपूर्ण है उतनी बंदिश की भी है। राग के अंतर्गत ख्याल गायन आता है तो संपूर्ण ख्यालगायन बंदिश के इर्द-गिर्द होता है। "बंदिश" यह शास्त्रीय संगीत का मुख्य अंग है। बंदिश से राग की व्याप्ती, उसका स्वरूप, उसकी जिम्मेदारी, आकार इत्यादि खुलासा बंदिश से होता है। कुमार गंधर्व जी बंदिश के संदर्भ में कहते हैं कि "बंदिश च्या मुळे" आपण राग फार वेगळया प्रकारे मांडू शकतो आणि (मग) तो राग वेगळाच दिसू लागतो, आणि वेगळा दिसला पाहिजे, जे अरुप आहे ना, ते वाटेल ते रूप घेऊ शकतो। बंदिशीच्या माध्यमानं ते पुढ म्हणतात- राग महणजे एक आत्मा आहे, त्याला शरीर ही लागतच, वेगवेगळी शरीर धारण करतो तो।" [1]

जब हम किसी भी राग को गाना प्रारंभ करते हैं तब हम उस राग के स्वरों को विस्तारित करके राग स्वरूप को दिखाते हैं। एक बार राग स्वरूप खड़ा हो गया तो अगला कदम राग की बंदिश होती है। बंदिश के माध्यम से उस राग के स्वर, रागस्वरूप, रागभाव, ताल, लय, रागचलन सब कुछ साध्य किया जाता है।

बंदिश में कुछ नियमों का पालन होता है जैसे- कुल बारह स्वरों से कौन से स्वरों का चुनाव करें अथवा ना करें। लय-ताल की सुंदरता, मुखड़ा, सम की योजना स्वरों का कम-ज्यादा प्रयोग, ठहराव की जगह, वक्र स्वर, स्वर-विस्तार, तान, लयकारी इत्यादि शास्त्रीय संगीत में बंदिश की पहली और अहम भूमिका होती है ताकि उसमें राग का स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे। परंपरागत बदिशों में हर राग में अनेक विलंबित, मध्य, द्रुत ख्याल रचे गए हैं। इन ख्यालों में सम पर आने वाले अलग-अलग मुखड़े मिलेंगे। यदि सूक्ष्मता से अध्ययन करें तो अच्छी बंदिशों में राग के स्वरूप के कई पहलू हमें दिखाई देगें। एक ही राग की अनेक बंदिशें रची जा सकती हैं। इन बंदिशों से भिन्न-भिन्न सौन्दर्य स्थल उभर आते हैं। इसीलिए गुणीजन कहते हैं – बंदिश के इर्द-गिर्द चलो, राग अपने-आप समझ में आ जाएगा। राग का ढ़ांचा मालूम हो जाएगा। बंदिश वह माध्यम है जिससे राग तुरंत पहचाना जा सकता है। विशिष्ट स्वर लगाव, वाक्य राग भाव निर्माण करना, बंदिश के घटक इत्यादि बंदिश के माध्यम से कायम रखना यह बंदिश का प्रमुख उद्दिष्ट है।

बंदिश का अर्थ

स्वर, शब्द और लय में बंधी रचना को बंदिश कहते हैं। रागों का स्वरूप स्पष्ट करने वाली रचना को बंदिश कहते हैं। गायन, वादन, नृत्य में बंदिश होती है। हिंदुस्तानी संगीत में किसी भी सांगीतिक रचना को बंदिश कहते हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

बंदिश की उत्पत्ति

- मूल फारसी शब्द 'बंदिश' से बंदिश यह शब्द निकला है।
- बंध अथवा बंद इसका अर्थ है-बंधन, नियम, नियमित रखाव, व्यवस्था, योजना इत्यादि.

इसी प्रकार से दो तरह से 'बंदिश' शब्द की उत्पत्ति बतायी जा सकती है। विभिन्न शब्दकोषों में बंदिश का अर्थ इस प्रकार है-

हिन्दी साहित्य कोष में बंदिश का अर्थ-

बंदिश व्यवस्था, आयोजन, संबद्ध वाक्य रचना, प्रकृष्ट बंधन। –[2]

हिन्दी उत्पत्ति कोष में –

बंदिश–स्त्री ,(बांधने की क्रिया या भाव हले के किया हुआ प्रबंध, रोक, रुकावट। ,[3]

मानव हिन्दी कोष में -

बंदिश-बांधने की क्रिया या भाव, कविता के चरणों, वाक्यो आदि में होने वाली शब्द योजना रचना प्रबंध जैसे गीत अथवा गजल की बंदिश, कोई महत्वपूर्ण काम करने से पहले किया जानेवाला प्रकार या आरम्भिक व्यवस्था। [4]

हिन्दी शब्द सागर –रचना- निर्माण करना, विधान करना, निश्चित करना, ग्रंथ लेखन, पैदा करना, काल्पनिक सृष्टि करना। [5]

महान कलाकारों द्वारा की गई बंदिश की परिभाषा इस प्रकार से है-

- डॉ. प्रभा अत्रे – रागों का तथा विशिष्ट रचना प्रकार का स्वरूप स्पष्ट करनेवाली, शब्द, स्वर, ताल, में बद्ध की गयी रचना। [6]
- प्रो. सुमति मुटाटकर के अनुसार – बंदिश एक नर्तन का पात्र है, जिसमे हम संगीत भरते है।[7]
- डॉ. विजया चाँदोलकर के अनुसार – "प्राचीन काल से भारतीय संगीत में राग तथा ताल में बंधी पद रचना को सामान्य रूप से गीत भी कहा जाता है। इसे हम आज बंदिश तथा वादय-संगीत के संदर्भ में गत कहते है। [8]
- अशोक रानडे – कागद हे चित्रकाराला अभिप्रेत असलेल्या कल्पनाविश्वात जाण्याचे प्रवेशद्वार बनते। तसेच चार ओळींच्या बंदिशीतून कलाकार आपल्याला राग विश्वात घेऊन जातो। [9]

बंदिश निर्मिती करना यह अपने आप में चुनौती है। बंदिश रचना के कुछ सिद्धांत होते है। जिसका हमे ध्यान रखना होता है, ठीक इसी संदर्भ में पंडित भातखंडेजी ने गीत रचना के सिद्धांत बताए है जो इस प्रकार से है-

- राग का स्थूल रूप।
- कौन-कौन से अंग कहाँ-कहाँ रखे जाये।
- कौन सी स्वर संगति
- मुक्त स्वर कौन से और कहाँ रखे जाएं।
- अमुक स्वर से गीत शुरू होने पर एक कल्पना पूरी होने के लिए कितने स्वर वाक्य।
- कौन सा विश्राम स्थान।
- किस वाक्य में कौन से स्वर आने चाहिए।

- कौन सा वाक्य कितना दीर्घ रखना चाहिए।
- चीज के शब्दों का उस वाक्य से कैसा संबंध रखा जाए।
- ताल के किस ठेके पर कौन सा भाग लाया जाये, इत्यादि। [10]

इसी तरह पं. श्रीकृष्ण बबनरावजी हलदणकर जी ने 'रसपिया' इस पुस्तक की प्रस्तावना में सत्यशील देशपांडे जी ने प्राथमिक तौर पर बंदिश के घटक क्या है? इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है-

- रागवाचक स्वर संगती
- लयतत्व – इसमे निहित है, लयकारी, लयदारी तथा शब्द संकोचन।
- शब्द – इसमें निहित है, भाषिक अर्थ तथा नादार्थ, ध्वनयर्थ, नादमयता, आघातषमता, उच्चारण में स्थित नृत्यामयात, इत्यादि।[11]

विद्वानों द्वारा बताए गए 'गीत रचना' के सिद्धांतो और बंदिश के घटको का यदि बंदिश निर्मिती के पूर्व सूक्ष्म अध्ययन किया जाए तो निश्चित ही वह निर्मित बंदिश 'आदर्श' बंदिश की श्रेणी में गणना हो जाएगी।

प्रभावी बंदिश के लक्षण

बंदिशों की कल्पनाओं का उद्भव मन में कब और कैसे होता है, बंदिशों द्वारा राग, ताल, काव्य की सुसंबद्ध संकल्पना कैसे साकार रूप लेती है, यह कोई ईश्वरीय देन है या फिर इसके लिए निरंतर अध्ययन, चिंतन-मनन, शिक्षा, मार्गदर्शन, गुरू का सहवास होना अत्यंत आवश्यक है। तभी हम किसी बंदिश की निर्मिती को आदर्श (उत्तम) अथवा प्रभावी बंदिश बनाने हेतु सफल हो पाएंगे। अत: इस बंदिश को प्रभावी बनाने के लिए लक्षण इस प्रकार से हैं-

- प्रमाणबद्धता – बंदिश के अनेक घटकों में प्रमाण बद्धता होणी चाहिए।
- काव्य –बंदिश का काव्य बहुत कठिन नहीं होना चाहिए ना ही अर्थहीन होना चाहिए। काव्य बंदिश की प्रकृति को जचना चाहिए।
- शब्द – शब्द बहोत कम भी नहीं होने चाहिए और शब्दो का ज़्यादापन भी अच्छी बंदिश की प्रकृति बिगाड देती है।
- बंदिश में तालमेल अथवा योजना – बंदिश में स्वरवाक्य, शब्द वाक्य और ताल वाक्य इनका मेल अच्छी तरह होना चाहिए। ताल के आवर्तन में शब्द वाक्य अच्छी तरह बैठना चाहिए। मुखड़ा या स्थायी के शब्दों की भाव स्थिति को चोट नहीं पहुचनी चाहिए। जो भाव आगे ले जाएगा या फिर स्थायी के भाव को स्पष्ट करने वाला अंतरा होना चाहिए।
- रागस्वरूप – अच्छी बंदिशों में राग स्वरूप खुलकर सामने आता है, ये बंदिश का महत्वपूर्ण लक्षण है।
- काव्य का भाव – काव्य का भाव स्पष्ट होने के लिए गीत रचना में राग के योग्य स्वरों का चुनाव होना चाहिए। राग और काव्य का रस स्पष्ट होने के लिए गीत रचना उचित ताल में बाँधनी चाहिए, जिससे गीत के उचित स्थानों पर ताल के आघात पड़ेगे, जिससे उसमे रसानुभूति हो सकेगी।
- अच्छी बंदिशें राग गायन के सौन्दर्य को विकसित करती हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

बंदिशों का रचना की दृष्टि से अध्ययन

साधक को शास्त्रीय संगीत जन प्रिय बनाने हेतु उत्तम रचना की निर्मिती पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, जिससे आम श्रोता भी बंदिश के माध्यम से राग संगीत से जुड़ सके। भारतीय संगीत जगत में बन्दिशकारों की एक परंपरा रही है जैसे सदारंग-अदारंग, उस्ताद फैयाज खाँ, पंडित गजानन बुवा जोशी, कुमार गंधर्वजी, प्रभा अत्रे जी इत्यादि इन महान बन्दिशकारों ने असंख्य बंदिशों की रचनाकर युवा पीढ़ी को एक अमूल्य वस्तु भेंट दी है। बंदिशों का रचना की दृष्टि से अध्ययन करते हुए यहाँ राग मालकौंस की पंडित कुमार गंधर्व जी द्वारा रचित एक रचना इस प्रकार से है

स्थायी- आनंद मना। आज आनंद मन

मोरा जो पिया घर आया।

अंतरा – चहूँ दिस सब चमकत। रतीया खिल गयो बगियाँ। [12]

ताल – एकताल (मध्य लय)

स्थायी

ध		ध									
म	-	म	ग	म	ग	ध	-	म	-	-	-
आ	S	S	नं	द	म	ना	S	S	S	S	S
०		३		४		X		०		२	
म	-	म	ग	म	ग	मध	-	म	-	ग	म
आ	S	S	नं	द	म	ना	S	S	S	आ	ज
०		३		४		X		०		२	
म	सा	ग	ग	म	ग	ध	-	म	-	म	-
०		३		४		X		०		२	
ग	म	ध	म	ध	-	मग	म	सां	-	ध	नि
मो	रा	जो	पि	या	S	घ	र	आ	S	या	S

अंतरा

ग	म	ध	म	नि	ध	सां	नि	सां	सां	नि	गं
च	हूँ	दि	स	स	ब	च	म	क	त	र	ति
०		३		४		X		०		२	
निसां	-	ध	म	ध	नि	ध	ग	सां	-	ध	नि
या	S	खि	ल	म	यो	ब	बि	या	S	S	S
०		३		४		X		०		२	

प्रस्तुत बंदिश का निरीक्षण इस प्रकार से कर सकते है-

- प्रस्तुत बन्दिश स्वर, ताल, शब्द का सम ताल मेल से बंधी एक सुंदर रचना है। इस बंदिश का सम बहुत आकर्षक है। संपूर्ण बंदिश में मालकौंस का स्वरूप स्पष्ट होता है। म- । म ग । म ग, ग म । ध म । ध –। स्थाई और अंतरे के अंत में सां - । ध नि । इस स्वर समूह में निषाद स्वर का लगाव नवीनतापूर्ण लगता है।

- बंदिश के तीनों आवर्तन में सम पर जो ठहराव है वहाँ गायक को राग की सुंदर जगह लेने का अवसर मिलता है। यह कुमार जी की खूबी रही है की वहं बारीक बारीक हरकतो द्वारा राग को सजाते है और एक हरकत के बाद इतना लंबा विश्राम देते हैं कि नया गायक उसे दोहराकर कुमारजी की गायकी सीख सकता है।
- बंदिश का काव्य बहोत अर्थपूर्ण है। संपूर्ण बंदिश में गीत का आशय पूर्ण होता है। इस बंदिश का जो आशय का भाव है उसे कुमारजी 'आनंद मना' इस पंक्ति को स्वररूपी भाषा से इतना सुंदर 'आनंद मना' को व्यक्त करते है। वो कहते है – गाताना येणारी मजा शब्दांची. सगळी जादू 'बंदिशीची'। गाण्यात भाषा आहेच। ती नादमय आहे। स्वर (स्वराक्षरे) पूर्वी होतेच, आताही आहेत, असतातच। पण व्यंजनांमूळं स्वरांवरचे आघात व लयकारी मिळते."[14] कहने का तात्पर्य कुमारजी अपनी बंदिशों का काव्य बहुत अलग-अलग विषयों में करते थे। उस काव्य की मजा वह गाते समय लेते थे।
- स्थाई की अंतिम पंक्ति पहली पंक्ति से बिल्कुल दुगुन लय में बांधी गयी है। इसी प्रकार अंतरा भी दुगुन लय में बांधा गया है।
- जिन स्वरों पर सम आता है वे सभी राग के न्यास के स्वर होते हैं।
- एकताल के खंड और काव्य का रखाव भी इस बंदिश में बहोत सुंदर लगता है।
- चमकत, रतिया, बगिया, पिया इन सभी शब्दो पर आकार करने में बहुत गुंजाइश होती है।

निष्कर्ष

शास्त्रीय संगीत में राग संकल्पना होती है और इस राग को 'बंदिश' सुबद्धता प्रदान करती है। स्वर, शब्द और लय बंदिश के मुख्य घटक है। ये तीनों जब एक रूप होते है तब सौन्दर्य तत्व पर एक साकार रूप प्राप्त होता है। पारंपरिक बंदिशों ने राग संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक ही राग से निकली अनेक बंदिशों से राग का सम्पूर्ण शास्त्र हमारे समक्ष स्पष्ट हो जाता है। अतः शास्त्रीय संगीत का आधार ही 'बंदिश' है। बंदिश का विश्लेषण होना जरूरी है क्योंकि ये बंदिशे ही सम्पूर्ण राग का विवरण देती है।

संदर्भ

1 भाटवडेकर मो. वि. (1999), कुमार गंधर्व: मुक्काम वाशी, मौज प्रकाशन गृह (पृ. सं .३३).
2 वर्मा धीरेन्द्र (1958), हिन्दी साहित्य कोष भाग – १, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (पृ. स. २९०)
3 डॉ. नरेश कुमार(1985), हिन्दी व्युत्पत्ति इंडो विजन, गाजियाबाद (पृ. स. ३५०)
4 वर्मा रामचन्द्र (1965), मानक हिन्दी कोष भाग-४ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, (पृ. स. ४००)
5 दास श्यामसुंदर (1922-1929),हिन्दी शब्दसागर, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
6 अत्रे प्रभा (1996), स्वरमयी मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ, अकैडमी (पृ. स. ८६).
7 संगीतकला विहार, दिसम्बर (1999), अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय प्रकाशन, मुंबई (पृ. स. ४२७).
8 डॉ. चाँदोलकर विजया(1993), भारतीय संगीत में निबद्ध तथा अनिबद्ध गान, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय विदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय (पृ. स. २).
9 रानडे अशोक (2022), नादयात्रा, उत्कर्ष प्रकाशन (पृ. स.११७),
10 पं भातखंडे.वि.ना(2003), क्रमिक पुस्तक मालिका भाग. ५, संगीत कार्यालय हातरस (पृ.स. ४९-५०).
11 पं. देशपांडे सत्यशील इन्होने पं. बबनराव हळदणकर की पुस्तक 'रसपीया' की प्रस्तावना में लिखा है।
12 पं.कुमार गंधर्व (1965), अनुपराग विलास, प्रथम संस्करण, वा. पु. भागवत, मौज प्रकाशन गृह, खटाववाड़ी, मुंबई (पृ.स. १०४)